Dr. Kartik Kumar
Asstt Prof (Guest)
Deptt of Psychology
S.R.A.P. College Barachakia,
(A constituent unit of B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur)

Class - B.A Part I (Hon)
Subject - Psychology
Topic - Role of Motivation in learning.
Day - Saturday
Date - 04/02/2023
Period - 2nd
Contact no - 8014661173/6202215 (WhatsApp)

अधिगम में अभिप्रेरणा का महत्व :- सीखने की क्रिया में प्रेरणा का महत्व अत्यधिक होता है। बिना प्रेरणा के शिक्षण की क्रिया सफल नहीं हो सकती है। प्रेरणा के माध्यम से ही प्राणी किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये उत्सुक होता है। जिसमें उसमें क्रियाशीलता की तीव्रता होती है। कोई विशेष कार्य को करने के लिये व्यक्ति को अधिक से अधिक प्रेरणा की आवश्यकता होती है। शिक्षण कार्य को तीन तरह से प्रभावित करता है

पहला — प्रेरणा व्यवहार को उत्पन्न करती है जैसे भूख की आवश्यकता उत्पन्न होने पर भोजन प्राप्ति सम्बन्धी क्रिया करनी जरूरी है।

दूसरा — प्रेरणा प्रबलन का काम करती है

तीसरा — व्यवहार की क्रियात्मक शीलता निर्धारित करती है - सीखने के सिद्धान्तों में थार्नडाइक, हल, गथरी ने प्रेरणा के पहले दो तथा स्किनर ने तीनों कार्य बताये हैं। इसलिए थार्नडाइक, गथरी, स्किनर को संपूर्ण रूप से प्रेरणा का प्रयोग न करना, बिल्कुल नया का माना है। इसका सबसे अभिप्रेरित क्रिया को प्रबलन के रूप में प्रतिपादित किया है। अतः इन सभी ने सीखने में प्रेरणा से पहले प्रेरणा में

प्रेरणा मनुष्य तथा जानवरों की क्रिया में क्रियाशीलता प्रदान करने के लिए प्रयुक्त करती है। जानवरों का खेल के रूप में भोजन, पानी, विशेष लिंगी व्यवहार प्रेरित करने वाली वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है।

Ajanta Officer

मनुष्यों को सीखने में मुद्रा और सामाजिक प्रेरक दोनों प्रकार के प्रबलन का प्रयोग किया जाता है। प्रेरणा के विभिन्न रूपों से नहीं प्रेरित होता है।

1. पुरस्कार एवं दंड (Reward & Punishment) मनुष्य के शिक्षण पर पुरस्कार एवं दंड का प्रभाव पड़ता है। इन प्रभावों को देखने के लिए प्रयोगात्मक अध्ययन किया गया और पाया गया कि पुरस्कार एवं दंड के स्वरूप या उसकी प्रबलता का कहाँ पर प्रभाव शिक्षण पर पड़ता है। पुरस्कार प्राणी के शिक्षण में सही अवस्थाओं के कायम रखने में तथा मजबूत करने के सहायक होता है।

2. प्रशंसा एवं निन्दा :- प्रशंसा एवं निन्दा मानव शिक्षण को बहुत दृढ़ तक प्रभावित करता है। हरलाक ने प्रशंसा और निन्दा के प्रभाव को देखने के लिए एक प्रयोगात्मक अध्ययन किया। उन्होंने अपना अध्ययन 100 छात्राओं पर किया, छात्राओं को प्रशंसा, निन्दा, उपेक्षित तथा नियंत्रण चार समूहों में बाँट दिया गया। वे सभी उम्र, लौंग, और क्षमता में समान थे। उन्हें 15 मिनट के तीस गणित के प्रश्नों को हल करने के लिए दिया गया। प्रशंसा समूह को प्रत्येक दिन प्रशंसा की जाती थी। चाहे उसका performance बुरा ही क्यों न था। निन्दा समूह को प्राप्तांकों से अवगत कराया जाता था। नियंत्रित समूह को कुछ नहीं कहा जाता था। इस प्रयोग में पाया गया कि प्रशंसा समूह का performance सबसे अच्छा था और निन्दा समूह का सबसे खराब था। इससे स्पष्ट होता है कि प्रशंसा शिक्षण की क्रिया में प्रेरणा का काम करता है।

3. परिणाम का ज्ञान :- परिणाम की जानकारी भी शिक्षण में प्रेरणा का काम करता है। मनुष्य की हिनाम्यक कुशलता को शिक्षण में बहुत ज्यादा कहाँ है। जब प्राणी को शिक्षण के दुर्ग के performance की प्रगति की जानकारी दी जाती है तो सफलता आगे के शिक्षण की ओर भी गतिशील और कुशल बनाता है।